1st Prelim - Model Answer Paper

Hindi

Time : 3 Hrs. **(Pages 16)** **Marks : 80**

उ.१.	**निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर पाठ्य-पुस्तक के पाठों के आधार पर लिखिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग पचास से साठ शब्दों में हो :**	
१.	प्रस्तुत पाठ 'गुप्त धन' लेखक उपन्यास सम्राट 'प्रेमचंद' द्वारा लिखित है। मानव के जीवन में धन एक आवश्यक चीज है। पर अधिक धन पाने की इच्छा या लालसा मनुष्य को, मनुष्य नहीं रहने देती। उसके भीतर की मानवतावादी वृत्ति समाप्त कर देती है। वह पशुवत व्यवहार करने लगता है। यदि मनुष्य धन का मोह त्याग दे तो वह भगवान भी बन सकता है। बाबू हरिदास मगनसिंह के गैर-हाजिर होने पर चिंतित होकर उसका हाल जानने के लिए उसके घर गए तो, मगनसिंह ने बताया कि उसकी माँ बहुत बीमार है और वह आप से मिलना चाहती है। बाबू हरिदास मगनसिंह के घर पहुँचे तब मगनसिंह की माँ ने बड़ी विनम्रतापूर्वक निवेदन किया कि आपने यहाँ आकर हम पर बहुत उपकार किया। मैं आप से मिलने की बहुत इच्छुक थी। अब आप ही मेरे बच्चे की रक्षा कीजिएगा। उसपर हमेशा अपनी दया-दृष्टि रखिएगा। मेरे दिन तो अब पूरे हो गए हैं। अब आप ही इस अनाथ बच्चे को सहारा दीजिएगा। कभी हमारे भी अच्छे दिन थे। बुरा समय आया तो सभी सगे-संबंधी ने आँखे फेर ली। मगन के पूर्वजों ने बुरे व कठिन समय के लिए कुछ धन बचाकर जमीन में गाड़ दिया था। उसे एक बीजक में लिखा था। वह बीजक हमें मिल नहीं रहा था। अचानक तीन दिन पहले वह मुझे रद्दी कागजों में मिल गया। मगन को भी इस विषय में कुछ पता नहीं है। आप संदूक से बीजक निकाल लिजिएगा। उसमें स्थान के विषय में लिखा है। आप वहाँ पर खुदवा के धन निकालकर मगन को दे दीजिएगा। इसलिए ही मैं आपसे मिलना चाहती थी। दुनिया में अच्छे लोग तो अब रहें नहीं। आप जैसा सच्चा और अच्छा इन्सान दूसरा कौन होगा जिसने हमेशा मेरे बच्चे की मदद की। इन शब्दों में मगनसिंह की माता ने हरिदास से निवेदन किया था।	
२.	कुशल राजनीतिज्ञ और गांधीवादी विचारधारा के समर्थक लेखक 'राजगोपालाचारी' ने 'जादूगर' कहानी में जादूगर के रूपक द्वारा नशीले पदार्थों के मानवजीवन में क्या-क्या दुष्परिणाम होते हैं, इसका बड़ा ही रोचक वर्णन किया है। माधवपुर के बुद्धिमानों में एक महात्मा थे। उन्होंने देखा कि नगर पर भारी संकट आ पड़ा है। चुप बैठने से नगर का सत्यानाश हो जाएगा। उन्होंने नगरवासियों की महासभा बुलाई। उन्होंने लोगों को समझाया कि जादूगर राजा को जो धन देता है, वह सब आपका है। वह लोगों को नशे में चूर करके उनका धन लूट रहा है। उसकी नशीली दवा पीकर लोग आलसी, असभ्य और दुराचारी बनते जा रहे हैं। लोग इसी तरह शराब के गुलाम बने रहे तो उनका और उनके नगर का विनाश होने में देर नहीं लगेगी। महापुरुष की बातों ने लोगों की	

आँखें खोल दी। लोग व्यापारी के घर की और दौड़ पड़े। व्यापारी अपनी जान बचाने के लिए राजा की शरण में आया। राजा ने सच्चाई जानकर जनआंदोलन का साथ दिया और उसे नगर छोड़ने का आदेश दिया।

इस प्रकार राजा का सहयोग न मिलने के कारण जादूगर नौ-दो ग्यारह हो गया।

३. आधुनिक भारत के शिल्पकार, स्वतंत्रता सेनानी, उच्च कोटि के साहित्यकार, स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री 'पं. जवाहरलाल नेहरूजी'ने 'राष्ट्रपिता' पाठ में गांधीजी के सत्य, श्रम-प्रतिष्ठा, धर्म-निरपेक्षता आदि मूल्यों पर जोर देते हुए देश की प्रगति के लिए उनका महत्व स्पष्ट किया है।

गांधीजी के अनुगामी होने के लिए हमें, जिन सिद्धांतो पर वे चलते रहे उनपर चलना होगा। गांधीजी की शिक्षा और सबक जीवन में उतारना होगा। सत्य और अहिंसा का जो रास्ता हमें दिखाया है, उसी पर आगे बढ़ना होगा। आज सब हम गांधीजी को याद करते हैं, उन्हें सराहते हैं और उनकी मूर्तियाँ स्थापित करने की बात करते है। क्या उस समय हमारे मन मस्तिष्क में यह विचार आते हैं, कि गांधीजी के सिद्धांत क्या थे? व्यक्ति, समाज और राष्ट्र को वे किस रास्ते पर ले जाना चाहते थे। सामाजिक और राजनैतिक मान्यताएँ क्या थी उनपर विचार करना होगा और उन्हीं सिद्धांतों, विचारों और मान्यताओं पर चलना होगा जिन पर गांधीजी जीवन भर चलते रहे और जिनके लिए ही उन्होंने अपने आपको बलिदान कर दिया। कुछ ऐसी शक्तियाँ हैं जो इसके विरोध में काम कर रही हैं। ऐसे लोग गांधीजी के सच्चे अनुगामी नहीं हो सकते। यदि हम सचमुच गांधीजी के अनुगामी बनना चाहते हैं, तो उनके व्यक्तित्व और कृतित्व से प्रेरणा लेनी होगी। इसी में मानव समाज और राष्ट्र का कल्याण है।

इस प्रकार गांधीजी के सच्चे अनुगामी बनने के लिए हमें उनके विचारों, मान्यताओं, सिद्धांतों और आदर्शों को अपनाना होगा।

४. लेखक 'विनय मोहन शर्मा' जी ने 'नजर नसाय गई मालिक' पाठ में स्वामी भक्ति, कर्तव्यनिष्ठ और ईमानदारी का असाधारण उदाहरण पेश किया हैं। शंकर जैसे सामान्य नौकर कहीं भी मिल सकते है पर ईमानदारी और अच्छे चरित्र का व्यक्ति मिलना कठिन हैं। इसी बात को प्रस्तुत पाठ में दर्शाया गया हैं।

नभ में काले बादलों का साम्राज्य निरंतर पाँच दिनों तक रहा। उमड़-घुमड़, गरजन-तरजन करते वर्षा के बादल खूब बरसे थे। कई दिनों तक सूर्य की एक किरण भी लेखक देख न पाए इसलिए बेचैन से थे। बरसात के दिनों को महाकवि कालिदास द्वारा दिए गए विशेषण-'दुर्दिन' से लेखक सहमत थे। लेखक यह जान चुके कि महाकवि ने ऐसा विशेषण क्यों दिया था। अपनी अनुभूति को महाकवि के विचारों से मिलते देख लेखक गर्व का अनुभव करने लगे।

पाँच दिनों के बाद लेखक को वह एक दिन मिला जब वर्षा थमी थी। नभ में काले बादल न थे। तेज धूप खिली थी। वातावरण में आनंद उल्लास था। लेखक ऐसे माहौल से प्रसन्न थे। एक मस्तमिजाज तरुण के गीत द्वारा लेखक पुनः भयभीत हो गए कि कहीं वर्षा फिर बरसने न लगे।

लेखक ने अपने अनुभव का वर्णन इन्हीं शब्दों में किया हैं।

SAMPLE

५.	प्रस्तुत एकांकी नाटक 'सच्चा सुख' में लेखक विश्वंभर 'मानव' ने मध्यमवर्गीय परिवार की मानसिकता व्यक्त की है। वे आशावादी दृष्टिकोण से संदेश देते हैं कि जीवन का सुख अनियंत्रित इच्छाओं को कम करके पति-पत्नी के एक-दूसरे के प्रति अनुकूल रहने में है। जया के घर में उत्सव है। जहाँ मिसेज खन्ना भी आती है। उनका कहना है कि कामिनी उन्हें देखकर जलती है। कल तक उसके पति कंपाउंडर थे आज डॉक्टर हो गए हैं। उनका कहना है डॉक्टर दवाई के नाम पर कोरा पानी देते है। नाम हो जाने के कारण दुनिया उनके पीछे दौड़ती है। वे घर पर आने की फीस नहीं लेते परंतु बिल में शीशी के कॉक का दाम तक लगा लेते हैं। सेठानी के बारे में मिसेज खन्ना कहती हैं कि सेठानी के पति रामलाल ने ही अपने बड़े भाई श्यामलाल की हत्या की है। श्यामलाल जी धार्मिक वृत्ति के थे। उनकी बुद्धि से ही सारा व्यापार चल रहा था, वे जाड़ा, गर्मी, बरसात कुछ भी हो सुबह चार बजे संगम पर नहाने चले जाते थे। एक बार मौका पाकर रामलाल ने उन्हें जल में धकेल दिया। उनके निगाह में रामलाल एक धूर्त व्यक्ति है। इस प्रकार मिसेज खन्ना की निगाह में दुनिया अंधी है, नामवालों के पीछे भागती है। इस तरह वे कामिनी और सेठानी की सब हकीकत के बारे में जानती है।	
६.	कुशल वक्ता, संवाददाता, समीक्षक तथा अनेक संस्थाओं के संचालक लेखक 'मेहेंदळे'जी ने 'पद्मश्री और पद्मभूषण' से सम्मानित अंतर्राष्ट्रीय ख्यातनाम वैज्ञानिक एवं अभियंता डॉ. माशेलकरजी के प्रभावशाली व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया है। युवकों से डॉ. माशेलकर की बड़ी-अपेक्षाएँ हैं। भारत को बलशाली महासत्ता बनाने के लिए भारतीय युवक तन-मन से मुलभूत वैज्ञानिक अनुसंधान में जूट जाए, यह आपकी हार्दिक इच्छा और युवकों से आग्रह है। वे इस बात से बेहद चिंतित और दुखी है कि आज के युवक वैज्ञानिक शोधकार्य से कन्नी काटकर केवल पैसे के टट्टू बनते जा रहे हैं। वे 'एम.बी.ए.' होकर 'मार्केटिंग' के शिकंजे में फँसते जा रहे हैं। साबुन, पेय, सौंदर्य प्रसाधनों या इसी तरह दूसरी उपयोग की वस्तुओं का मार्केटिंग करते घूम रहे हैं। इससे उन्हें पैसा अवश्य मिलता है लेकिन देश की अनुसंधान क्षेत्र में बड़ी हानि हो रही है। परिणाम स्वरूप अनेक वैज्ञानिक प्रतियोगिताओं में भारत पिछड़ रहा है। माशेलकर जी चाहते है कि आज के युवक वैज्ञानिक पैसे को महत्व न देते हुए देश हित के बारे में सोचे। नए - नए शोध एवं अविष्कार करे जिससे देश के विकास में सहयोग मिल सके। विदेशी चमक - दमक से आकर्षित होकर विदेश न जाएँ। अपनी योग्यता एवं अनुभव का देशहित में प्रयोग करें। इस प्रकार डॉ. माशेलकर ने युवकों से पैसे का महत्व न देते हुए समाज और देश हित में कार्य करने का आग्रह किया है।	
उ.२.	**(अ) निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर पाठ्य-पुस्तक के पाठों के आधार पर केवल एक-एक पूर्ण वाक्य में लिखिए :**	
१.	लेखक काकासाहेब कालेलकर अपने आपको 'सह्यपुत्र' तथा 'कृष्णपुत्र' कहलाते है।	
२.	ऐनक मैक्समूलर के लिए 'गूलेर के फूल' के समान है।	
३.	पापा शापिंग के लिए अम्मी को साथ ले जाते थे।	

SAMPLE

(आ)	**निम्नलिखित वाक्यों के रिक्त स्थानों की पूर्ति पाठ्य-पुस्तक के पाठों में प्रयुक्त शब्दों से कीजिए। प्रत्येक वाक्य पूर्ण लिखकर रिक्तपूर्ति के शब्दों को अधोरेखांकित कीजिए :**	
१.	अज्जू को बहुत-से सर्टिफिकेट मिले, **वजीफा** मिला।	
२.	सबेरे-सबेरे चलकर अस्सी मील दूर **डिब्रूगढ़** पहुँचे।	
३.	बरामदे में एक बड़ा-सा **अल्सेशियन** कुत्ता बैठा था।	
(इ)	**पाठ्य-पुस्तक के पाठों के आधार पर पूर्ण वाक्य में लिखिए कि निम्नलिखित वाक्य किसने और किससे कहा है :**	
१.	देहाती ने बाबू साहब से कहा।	
२.	गायत्री ने अपने बेटे आलोक से कहा।	
(ई)	**पाठ्य-पुस्तक के पाठों के आधार पर निम्नलिखित विधान के साथ दिए गए विकल्पों में से एक सही विकल्प जोड़कर प्रत्येक विधान पूर्ण वाक्य में लिखिए :**	
१.	'रमता राम' इसलिए कहते हैं कि **जो रमता नहीं, वह राम नहीं।**	
२.	परमात्मा का ही चमत्कार है कि **हालत सुधर रही है।**	
उ.३.	**(क) निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर पाठ्य-पुस्तक की कविताओं के आधार पर लिखिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग पचास से साठ शब्दों में हो :**	
१.	'बाललीला' पद में संत कवि 'सूरदास' ने श्रीकृष्ण की बाललीला का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया हैं। इस पद में बालक कृष्ण अपनी माँ यशोदा से अपने बड़े भाई बलराम की शिकायत कर रहा हैं और यशोदा उसे समझा रही हैं। अपने बड़े भाई बलराम की शिकायत बालक कृष्ण अपनी माँ यशोदा से करता हैं। बलराम मुझे चिढ़ाकर कहते हैं कि मैं तेरा पुत्र नहीं क्योंकि तुम और पिता नंद गोरे हो और मैं साँवला। तुम दोनों ने मुझे मोल देकर खरीदा हैं। बड़े भाई बलराम की ली गई चुटकियों को सुन ग्वाले भी नाचते, मुस्कुराते और मुझपर हँसते हैं। तुम भी मुझे ही मारती हो और उस पर नहीं चिढ़ती। बालक कृष्ण की बातें सुन तथा उनका क्रोध से भरा चेहरा देखकर यशोदा मोहित हो रही थी। यशोदा ने प्रेम से समझाते हुए कृष्ण से कहा कि मैं जानती हूँ कि बलराम जन्मतः बहुत ही चालाक और धूर्त है। इसलिए वह सभी से तुम्हारी चुगलखोरी करता हैं। परंतु मैं गो रूपी धन की शपथ लेकर कहती हूँ कि मैं ही तेरी माता हूँ और तू मेरा पुत्र हैं। इस प्रकार क्रोध से भरे बालक कृष्ण को माँ यशोदा ने प्रेमपूर्ण शब्दों में समझाकर उसकी शिकायत दूर की।	
२.	'मानिनी यशोधरा' में कवि 'मैथिलीशरण गुप्त' ने यशोधरा के निग्रह तथा पतिव्रता धर्म के पालन करने के भाव को प्रकट किया हैं। इस कविता में यशोधरा अपने मन को बात न बिगड़ने देने के निश्चय पर अडिग रहने की बिनती करती हैं। पत्नी यशोधरा और पुत्र राहुल को छोड़कर सिद्धार्थ सिद्धि प्राप्त करने चले गए थे। पति के इस तरह चले जाने पर भी यशोधरा निराश नहीं होती। वह एक मानिनी पतिव्रता हैं।	

SAMPLE

वो निग्रह करती हैं कि वह स्वयं पति के स्वागत के लिए नहीं जाएगी। आज पति सिद्धार्थ, बुद्ध बनकर महल में लौट आए हैं। यशोधरा अपने मन से निवेदन करती हैं कि मेरे प्रण की लाज रखना। पति के स्वागत के लिए इतने व्याकुल मत हो जाना कि वह निग्रह, प्रण टूट जाए। ऐ मन, अपने निश्चय पर अडिग रहना क्योंकि आज तुम्हारी परीक्षा का दिन हैं। कवि के शब्दों में -

रे मन, आज परीक्षा तेरी
विनती करती हूँ, मैं तुझसे, बात न बिगड़े मेरी।

इस प्रकार यशोधरा अपने मन को समझाते हुए बात न बिगड़ने देने की विनती करती हैं।

३. 'बिजलियाँ गिरने नहीं देंगे' कविता में कवि 'डॉ. महेंद्र भटनागर' ने आस्थावादी विचार प्रकट किया हैं। आज के अशांत और भयावह वातावरण में भी कवि विश्वास के साथ कह देते हैं कि हम इन्सानों के मासूम सपनों पर बिजलियाँ गिरने नहीं देंगे।

कवि के अनुसार भले ही कुछ लोग युद्ध करने की इच्छा से वातावरण अशांत और अस्थिर करने का प्रयत्न करें। भले ही वे युद्ध का डंका बजाएँ, परंतु हम भारतवासी शांति के झंडे को कभी भी झुकने नहीं देंगे। इतिहास के किसी भी काल को देखने पर पता चलता हैं कि हम भारतवासी आरंभ से ही इंसानियत और शांति में विश्वास रखते हैं तथा गौतम बुद्ध के मंत्र 'करूणा' और महात्मा गांधी के 'अहिंसा' के रास्ते पर चलने के उपदेशों को हम हमेशा अपने हृदय में रखते हैं।

कवि के अनुसार -

हम इतिहास के आरंभ से इंसानियत में, शांति में विश्वास रखते हैं, गौतम और गांधी को हृदय के पास रखते हैं!

इस प्रकार कवि भटनागर शांति के झंडे को झुकने ना देने का आशावादी विश्वास व्यक्त करते हैं।

४. 'दाने मकई के' कविता में कवि 'निलय उपाध्याय' ने मक्के के मानवीकरण द्वारा सकारात्मक सोच और गाँव की खेती-बाड़ी में उम्मीदों और खुशियों की झिलमिलाहट को प्रस्तुत किया हैं।

मकई के दाने किसान के घर जाकर उसकी सारी चिंताएँ, दुःखों, भूख और कठिनाईयों को दूर करना चाहते हैं। मकई के दानों से किसान का करूण जीवन देखा नहीं जाता। वे भूख से तड़पते किसान के बच्चों को देख व्यथित हो जाते हैं। वे चाहते हैं कि किसान के इस करूण, दुःखद और गरीब जीवन का अंत हो। वे किसान को बिजूखे से आदमी बनाना चाहते हैं। वे सोचते हैं कि यदि किसान उन्हें अपने घर ना ले गया तो धूप उन्हें लुटाकर समाप्त कर देगी और उनका जीवन व्यर्थ हो जाएगा तथा उनका मन भी अब खेतों में नहीं लगता।

कवि के अनुसार -

ले चलों नहीं तो लुटा देगी हमें धूप
ले चलों कि हमारा मन भी नहीं लगता यहाँ।

इस प्रकार मकई के दाने किसान के घर जाना चाहते हैं।

५. 'मत काटो मेरे हाथ' कविता में कवि 'सदाशिव कौतुक' ने पर्यावरण प्रेम को प्रस्तुत किया हैं। प्रस्तुत कविता में धरती अपने पुत्रों से निवेदन करती हैं कि उसके हाथ अर्थात वृक्ष मत काटे जाए।

SAMPLE

पेड़ इस धरती पर पर्यावरण का संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पेड़ों से वर्षा, शुद्ध वातावरण, ताजी हवा, ताजे फल, जड़ी-बूटी प्राप्त होती हैं। पेड़ धरती को उपजाऊ बनाए रखते हैं। कवि के अनुसार ग्रीष्म में छाँव, शीत में ओढ़ना, बारिश में छाता पेड़ ही होते हैं। यदि पेड़ काट दिए जाए तो पर्यावरण असंतुलित हो जाएगा। वर्षा नहीं होगी और पानी के बिना सारा जीवन मरुभूमि बन जाएगा। ना शुद्ध वातावरण होगा और ना ही धरती उपजाऊ रह पाएगी। जिससे अकाल जैसी भयंकर समस्या उत्पन्न हो जाएगी। मनुष्य तड़प-तड़पकर मरने को मजबूर हो जाएगा।

इस प्रकार पेड़ों के कट जाने पर भयंकर आपत्तियाँ आ सकती हैं।

(ख) **निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर पाठ्य-पुस्तक की कविताओं के आधार पर एक-एक पूर्ण वाक्य में लिखिए :**

१. सोना पाने मात्र से व्यक्ति अपना मानसिक संतुलन खो बैठता है।
२. जिसका कर्म सच्चा नहीं है, वह विद्‌वान या साधु नहीं हो सकता।
३. शहीद अपनी याद में दो फूल चढ़ाने के लिए कहते हैं।
४. 'बात न बिगड़े मेरी' ऐसी यशोधरा ने अपने आपसे कहा है।
५. बालिका नष्ट नयनों की जीवन ज्योति है।

(ग) **निम्नलिखित पंक्तियों के रिक्त स्थानों की पूर्ति पाठ्य-पुस्तक की कविताओं में प्रयुक्त शब्दों से कीजिए। प्रत्येक पंक्ति पूर्ण लिखकर रिक्तपूर्ति के शब्दों को अधोरेखांकित कीजिएः**

१. हम तुम्हें **बिजूखे** से आदमी बना देंगे।
२. वत्स ! अपनी **जीवनडोर** मत काटो अपने हाथों से।
३. सब अपना सौभाग्य मनाएँ, दरस-परस, **निःश्रेयस** पाएँ।
४. थामो इसे, शपथ लो, **बलि** का कोई क्रम न रुकेगा।

उ.४. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर पूरक पठन की कथाओं के आधार पर लिखिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग साठ शब्दों में हो।**

१. हुगली के कोलकाता की तरफ वाले घाट की सीढ़ियों पर बैठे हुए निराश आदमी से लेखक श्री ईश्वरचंद्र विद्‌यासागर ने उसकी निराशा का कारण जानने के लिए बातचीत की। बहुत पूछने पर उस आदमी ने बताया कि अपनी बेटी की शादी करने के लिए जो कर्ज उसने लिया था, उस कर्ज की रकम वह चुका नहीं पा रहा हैं।

यह जानकर कि अगले दिन खलीफा जज के फैसले से उसकी डिक्री हो जाएगी, उसका घर भी गिरवी रखा हैं, शायद उसे जेल भी हो जाए, ऐसे में उसकी पत्नी और बच्चे बेसहारा हो जाएँगे। ईश्वरचंद्र को दया आ गई।

अगले ही दिन सुबह ईश्वरचंद्र विद्‌यासागर ने अदालत में जाकर संबंधित अधिकारियों से उस मामले की जानकारी प्राप्त की। आदमी सच कह रहा था, यह पता लगते ही उन्होंने कर्ज की कुल रकम मालूम की और अपनी गाढ़ी कमाई से उसका सारा कर्ज चुका दिया। कर्जदार लगभग एक घंटे बाद अपने सर्वनाश पर विचार करते हुए जब अदालत पहुँचा तो

SAMPLE

	किसी ने उसका सारा कर्ज चुका दिया था और अब वह स्वतंत्र हैं यह जानकर उसे बेहद आश्चर्य और हर्ष हुआ। इस तरह कर्जदार का कर्ज चुकाकर उसे चिंतामुक्त करके श्री ईश्वरचंद्र विद्‌यासागर ने कर्जदार की मदद की।	
२.	हंस बरगद के पेड़ के नीचे कुछ देर विश्राम करने के लिए क्या रूक गए, तो उसी पेड़ के कौए ने हंसों पर चिरक दिया और अपनी कर्कश आवाज से तथा तिरस्कारपूर्ण शब्दों से उन्हें परेशान करने लगा। हंसों ने कौए को विनम्रता से बताया कि वे राजहंस हैं। लंबे सफर की थकान उतारकर थोड़ी ही देर में वहाँ से चले जाएँगे। फिर भी उसने हरकते बंद नहीं की। बल्कि वह अपनी साधारण उड़ानों को असाधारण बताकर, इक्यावन उड़ानों का प्रदर्शन करके हंसों को उड़ान स्पर्धा के लिए ललकारने लगा। कौए द्‌वारा इतना कुछ कहने-करने पर भी वृद्‌ध हंस चुप ही रहे क्योंकि उनका विचार था कि उस कौए की सात पीढ़ियों ने कभी हंस देखे नहीं होंगे और उन जैसे मानस सरोवर के राजहंस यदि कौए के मुँह लगे और स्पर्धा में उतरे तो उसे व्यर्थ ही झूठा यश प्राप्त हो जाएगा। इसलिए उसे बकने दिया जाए और वे तो कुछ देर में वहाँ से जाने वाले हैं ही। इस प्रकार हंसों ने कौए की हरकत का सामना खामोशी और शालीनता से किया।	
३.	बुड्ढे किसान ने वैसा गेहूँ का दाना न कभी बोया, न काटा, न खरीदा था। संभवतः उसके बाप को इस बारे में जानकारी हो यह सोचकर उसके बाप को महाराज के सामने लाया गया। बुड्ढे किसान का बाप एक बैसाखी से चलता हुआ आया। उसकी आँखें अब भी ठीक तरह से देखने के लायक थी। उसने दाने को बड़े ध्यान से देखा था। वह थोड़ा ऊँचा जरूर सुनता था। लेकिन उसके कान अपने बेटे जैसे बहरे नहीं थे। गेहूँ के संदर्भ में उसने जवाब दिया कि उसने ऐसा अनाज अपने खेत में न बोया, न काटा, न खरीदा हैं। क्योंकि उसके जमाने में सिक्कों का चलन ही नहीं था। सभी अपनी जरूरत भर का अन्न उगा लेते थे या बाँट -बदल लेते थे। उसके जमाने के अनाज का दाना बड़ा और भारी जरूर होता था, लेकिन उसने इतना बड़ा दाना कभी नहीं देखा था। उसने अपने पिता से सुना था कि उनके जमाने में गेहूँ का दाना बहुत बड़ा हुआ करता था। और एक दाने से काफी मात्रा में आटा मिल जाया करता था। इसलिए उसके बाप से इस संदर्भ में पूछना चाहिए।	
४.	एक बार जापान के निप्पन राज्य का अत्याचारी शासक मासामू बर्फ से ढकी समस्त धरती को देखने के लिए नगर के बाहर बने आवास में अपने सेवकों और मित्रों के साथ गया। जापान के लोग कमरे में गेटा (काठ के जूते) पहनकर प्रवेश नहीं करते थे। इसलिए उन सभी ने अपने गेटे बाहर निकालकर उनकी देखरेख का जिम्मा नौकर हेइशिरो को दिया। मासामू को भीगे-गीले जूते पहनने का कष्ट न उठाना पड़े, यह सोचकर हेइशिरो ने मासामू के जूते अपने कपड़ों में छुपा लिए। बाहर निकलकर मासामू ने सूखे गेटे पहने तो उसे बेहद आश्चर्य हुआ की जब सारी धरती बर्फ से ढँक गई है तो उसके गेटे बिना भीगे कैसे रह गए। उसने सोचा कि जरूर नौकर हेइशिरो उसके जूते पर बैठकर आराम कर रहा होगा और उसे इस बात का मजा चखाना चाहिए।	

SAMPLE

यह सोचकर उसने अपने गेटे हाथ में लेकर हेइशिरो की खूब पिटाई की जिसके कारण हेइशिरो बेहोश होकर वहीं जमीन पर गिर पड़ा था। वहीं बेहोश पड़े हेइशिरो जब अगले दिन होश में आया तो उसका सारा शरीर दर्द कर रहा था और वह बहुत क्रोध में था।

उसने तो मासामू की सुविधा का ख्याल करके अच्छा काम करना चाहा था और मासामू ने बिना जाने-समझे उस पर इतना अत्याचार किया। इस बात से वह अपने को अपमानित महसूस कर रहा था।

इसलिए हेइशिरो मासामू से प्रतिशोध लेना चाहता था।

अथवा

निम्नलिखित में से किसी एक लोककथा का सारांश अपने शब्दों में लगभग एक सौ पचास शब्दों में लिखिए :

१. **हंस और कौआ -** गंगा के किनारे बरगद का एक पेड़ था। उस पेड़ पर पक्षियों की एक बड़ी बस्ती रहती थी। उसी पेड़ पर एक कौआ भी रहता था। काजल से काले उसके पंख और पंखों से भी काली उसकी चोंच। एक आँख का काना और एक पैर से लंगड़ा। कौआ दुष्ट तो था ही घमंडी भी था। हमेशा काँव-काँव करता रहता था। एक दिन तीन हंस लंबी यात्रा तय करने के बाद उसी बरगद के पेड़ के नीचे विश्राम करने के लिए आए। हंसों का वहाँ आना कौए को अच्छा नहीं लगा। वह काँव-काँव करके फुदकने लगा। कभी इस डाल पर तो कभी उस डाल पर। कभी ऊपर तो कभी नीचे। उसे इस बात का घमंड था कि उसके जैसा ऊँची उड़ान भरने वाला कोई दूसरा पक्षी नहीं है। उसने हंसों का अपमान किया। उनके ऊपर चिरक दिया। उसने हंसों को उड़ान भरने की चुनौती दी।

तीनों हंसों में एक नौजवान हंस था। उसकी जवानी अभी-अभी फूट रही थी। उससे कौए का अपमान सहन नहीं हुआ। वह सामने आया और कौए की चुनौती को स्वीकार किया। वह बोला, “भाई! तुम्हें इक्यावन उड़ानें आती हैं; उतनी तो मैं नहीं जानता। पर एक उड़ान जानता हूँ।” और दोनों की एक उड़ान शुरू हुई। आगे-आगे कौआ और पीछे-पीछे हंस। दोनों उड़ते-उड़ते जब गहरे पानी के पास पहुँचे तो कौआ पूरी तरह थक गया था। उसके पंख पानी की सतह को छूने लगे। कुछ देर बाद कौआ भाई के पंख पूरी तरह भीग गए। वह पानी पीने लगा। अब उसके लिए उड़ना संभव नहीं था। आखिर उसने हार मान ली। युवक हंस ने उसे अपनी पीठ पर बिठाकर उसी बरगद के पेड़ के नीचे लाकर छोड़ दिया।

लेकिन कौआ तो कौआ ही होता है। वह काँव-काँव करता, पेड़ पर जा बैठा और फिर हंसों पर चिरक दिया। सच है दुष्ट व्यक्ति अपनी दुष्टता कभी नहीं छोड़ते।

२. **तीन पीढ़ी का राज्य -** जापान के ‘सिनानो’ नामक राज्य में एक बहुत घमंडी राजा रहता था। एक दिन उसने अपने राज्य में घोषणा करवा दी कि सत्तर वर्ष से अधिक उम्र के सभी निकम्मे बूढ़ो को उनके घर से निकाल दिया जाए। यदि इस आज्ञा का पालन नहीं किया गया तो उसे कठोर सजा मिलेगी। राजा की इस घोषणा से गाँवों और शहरों में शोर मच गया। फिर भी राजा के डर से लोग अपने माँ-बाप को कंधे पर बिठाकर जंगल की ओर जाने लगे। गेंसुके

नामक ग्रामवासी भी अपनी माँ को पीठ पर बिठाकर जंगल की ओर जा रहा था। उसकी माँ रास्ते में पेड़ की टहनियों को पकड़ती - तोड़ती चली जा रही थी। गेंसुके ने सोचा कि माँ जंगल से वापस आने के लिए निशानी छोड़ती जा रही है। जब वह माँ को जंगल में छोड़कर लौटने लगा तो माँ ने कहा कि, "गेंसुके, तुम अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना। रास्ता भूलना नहीं। रास्ते में टहनियों के निशान है।" यह सुनकर वह रोने लगा और माँ को घर वापस ले आया। राजा की डर से उसने घर के नीचे ही एक गुफा तैयार की और माँ उस को गुफा में छिपाकर रखा। माँ-बाप के बिना गाँव के सभी लोग उदास थे। खेती करने में मन नहीं लगता था। लगान का चावल भी नहीं दे पाते थे। राजा ने दूसरा आदेश दिया कि जो लोग अपने बूढ़े माँ-बाप को जंगल से वापस लाना चाहते है, वे राख की रस्सी बनाकर पेश करें। गेंसुके की माँ ने उपाय बताया कि रस्सी को नमकीन पानी में भिगोकर सुखाना फिर उसे लोहे की थाली पर रखकर आग में तपाना। कुछ देर बाद राख की रस्सी बन जाएगी। गेंसुके ने ऐसा ही किया और रस्सी बन गई। इस तरह राजा की दूसरी और तीसरी शर्त भी गेंसुके की माँ की सहायता से पूरी हो गई। राजा ने गेंसुके से पूछा कि, "तुमने यह सब किससे सीखा है?" बूढ़े लोग शरीर से कमजोर हो जाते है ; लेकिन उनके पास जीवनभर के अनुभवों का अनमोल खजाना होता है। यह सुनकर राजा का घमंड चूर-चूर हो गया। उसने अपनी गलती के लिए क्षमा माँगी और सबको अपने बूढ़े माँ-बाप को वापस लाने के लिए कहा।

उ.५. **(ट) निम्नलिखित मुहावरों में से किन्हीं तीन मुहावरों का हिंदी में अर्थ देकर उन मुहावरों का अपने अर्थपूर्ण वाक्यों में प्रयोग कीजिए। प्रत्येक मुहावरे के लिए अलग-अलग वाक्य हो। प्रयुक्त मुहावरे को अधोरेखांकित कीजिए :**

१. **धूल झोंकना** - धोखा देना।
चोर पुलिस की आँखों में धूल झोंककर भाग गया।

२. **पोल खोलना** - रहस्य बताना।
प्रजा ने राजा के सामने धोखेबाज मंत्री की पोल खोल दी।

३. **नजर नसाई जाना** - नीयत बिगड़ जाना।
नजर नसाय जाने पर इन्सान इन्सानियत खो देता है।

४. **ताँता बँधना** - कतार लगना।
स्वाईन फ्ल्यू के कारण अस्पताल में मरीजों का ताँता लगा है।

५. **राम रोशन करना** - कीर्ति फैलाना।
'सा रे ग म' यह संगीत प्रतियोगिता जीतकर कार्तिकी ने आलंदी का नाम रोशन किया।

(ठ) निम्नलिखित वाक्यों में से किन्हीं तीन वाक्यों को कोष्ठक में सूचित काल में परिवर्तित करके पूर्ण वाक्य लिखिए :

१. डाकबंगले में भी पानी भर गया है।
२. आप मुंबई जा रहे हैं।
३. आगामी शताब्दी भारत की होगी।
४. उनके आशीर्वाद आज भी हमें मिलते हैं।

SAMPLE

(ड) **निम्नलिखित अव्ययों में से किन्हीं दो का अव्यय के रूप में ही अर्थपूर्ण वाक्यों में प्रयोग कीजिए। प्रत्येक अव्यय के लिए स्वतंत्र वाक्य हो। प्रयुक्त अव्यय को अधोरेखांकित कीजिए:**

१. पास - हमारे घर के पास मंदिर है।

२. पर - रोशन की आमदनी बहुत अच्छी है पर उसे खर्च करने की आदत है।

३. कभी - हम कभी घूमने जाएँगे।

(ढ) **निम्नलिखित वाक्यों में से किन्हीं दो वाक्यों को शुद्ध करके पूर्ण शुद्ध वाक्य लिखिए :**

१. हमें शांति से रहना चाहिए।

२. वह जाली से टा-टा करना नहीं भूला।

३. मैंने भारत से प्रेम किया है।

उ.६. **निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग १५० से २०० शब्दों में निबंध लिखिए :**

१. **विविधता में एकता**

हमारा देश भारत अनेक रंगों में रंगा है। उसकी विविधता में ही एकता छिपी है। अनेक प्रकार की विविधता देश में दिखाई देती है। जैसे भौगोलिक रचना की दृष्टि से भारत में भिन्नता है। अलग-अलग प्रांतों की जलवायु भिन्न है। भिन्न भिन्न क्षेत्रों की भाषा है। क्षेत्रीय रीति-रिवाज अलग-अलग है। खान-पान में भिन्नता है। अलग-अलग प्रांतो की वेशभूषा अलग है। इस प्रकार भारत में विविधता के दर्शन होते हैं ।

इस विविधता के बावजूद भी यहाँ के लोगों की भावधारा व विचारधारा एक हैं। रामायण और महाभारत जैसे ग्रंथों से सभी समान रुप से प्रभावित हैं। सभी ने इन महाग्रंथों की विचारधारा को जीवन में प्रधानता दी है। इन महाकाव्यों से देश की सभी भाषाएँ प्रभावित है। भारतीय भाषाओं का साहित्य श्रेष्ठ है। उसके विचारों और कथावस्तुओं में अद्‌भुत समानता दिखाई हैं। रामायण और महाभारत सभी के लिए प्रेरणास्थान है। संस्कृत और प्राकृत भाषाओं का साहित्य सभी के लिए मार्गदर्शक रहा है। सर्वत्र एक ही दर्शन और साहित्य का रुप नजर आता है।

भारत देश की एक सांस्कृतिक विरासत है। इसी कारण एक से धार्मिक विश्वासों ने देश के सभी हिंदुओं को सांस्कृतिक एकता में बाँधे रखा है । हिंदुओं के साथ-साथ मुसलमान, पारसी और ईसाइयों ने भी भारतीय संस्कृति को अपनाया है। आचार-विचार, व्यवहार और आदतों में संपूर्ण भारत की एक छाप है। बड़ी आसानी से हम परदेश में एक भारतीय व्यक्ति को पहचान सकते हैं। सभी को हमारी संस्कृति ने एकता के सूत्र में बाँध रखा है। हम सभी के जीवन मूल्य समान हैं।

इसी कारण यह कहा जाता है कि विविधता में एकता छिपी है।

SAMPLE

२.

मेरा प्रिय त्योहार - रक्षाबंधन

भैया मेरे, राखी के बंधन को निभाना।
भैया मेरे, छोटी बहन को ना भूलाना।।

यह गीत का मुखड़ा याद दिलाता है रक्षाबंधन की। यह त्योहार श्रावण मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। यह रेशमी धागा भाई-बहन के प्रेम का प्रतिक है।

रक्षाबंधन के दिन ब्राह्मण लोग अपनी रक्षा के लिए क्षत्रिय शूरवीरों के हाथ में बंधन बाँधते थे, और ब्राह्मणों को धनदान देकर उनकी रक्षा की प्रतिज्ञा करते थे। भगवान श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर को जो कथा सुनाई थी उसके अनुसार, एक बार देवता और दैत्य में युद्‌ध हुआ जिसमें देवता हार रहे थे। तब देवताओं के गुरु बृहस्पति के कहने पर शची ने इंद्र को ऋषियों द्‌वारा दिया गया रक्षा-सूत्र बाँधा, तब इंद्र को शक्ति प्राप्त हुई और देवता जीत गए। एक ऐतिहासिक कथा भी इस रक्षाबंधन के महत्व को उजागर करती है। गुजरात के राजा बहादुरशाह ने मेवाड़ पर आक्रमण किया, तब संकट के समय रानी कर्मवती ने हुमायूँ को राखी भेजी। तब हुमायूँ ने राखी का सम्मान करते हुए बहादुरशाह के खिलाफ हिंदू बहन की मदद की।

श्रावणी पर्व पर बहन भाई को राखी बाँधकर रक्षा का वचन लेती है। उनमें प्रेम और सहानुभूति विद्‌यमान है। इन अवसरों पर हम अपने वैर-भावों को भुलाकर आपस में प्रेम से मिलते है, इससे प्रेमभाव जागृत होता है। हमारे जीवन में आनंद, उत्साह, पराक्रम, शांति तथा बल की वृद्‌धि होती है। यह त्योहार विश्वप्रेम तथा विश्वशांति की स्थापना के उद्‌देश्य से मनाया गया है।

आधुनिक भौतिक युग में त्योहार का रूप बदल रहा है। यदि हमें अपने प्राचीन गौरव को प्राप्त करना है तो अन्य त्योहारों की भाँति इसमें सुधार लाना होगा। यदि हम त्योहार के प्राचीन गौरव को समझकर त्योहार मनाए तो समाज में स्नेह और प्रेम की धारा बहेगी।

३.

महँगाई एक समस्या

आज का युग विज्ञान का युग है। मानव विज्ञान के क्षेत्र में बहुत प्रगति कर चुका है। नए-नए वैज्ञानिक अविष्कारों ने मानव को सुविधाभोगी बना दिया है। सुविधाभोगी होने के कारण खर्च बढ़ गया है। आज आवश्यक वस्तुओं के दाम आकाश चूमने लगे हैं।

मानव समाज आज वर्गों में बँट गया है। महँगाई के कारण आज गरीब और गरीब बनता जा रहा है। सुविधाभोगी वर्ग ऐश्वर्य का जीवन जी रहा है। गरीब व्यक्ति के लिए दो वक्त की रोटी के लाले पड़ गए हैं। इस महँगाई की मार से सबसे ज्यादा मध्यमवर्ग ही प्रभावित होता है। उसे अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए हर चीज पर ध्यान देना पड़ता है।

हमारी सरकार में बैठे लोगों के खर्च इतने बढ़े हुए हैं कि वे पैसे को कोई महत्त्व नहीं देते। चाहे नेता हों या सरकारी अधिकारी उनमें कामचोरी ज्यादा है, भ्रष्टाचार ज्यादा है कर्तव्यनिष्ठा बिल्कुल नहीं है। उनका जीवन आलीशान बंगलों तथा विदेशी कारों में घूमकर व्यतीत हो रहा है। उन्हें मध्यमवर्ग और गरीब की कोई चिंता ही नहीं है।

SAMPLE

महँगाई बढ़ने का एक कारण उपयुक्त उत्पादन का अभाव है। जो सूखा, बाढ़ या भूकंप आदि कारणों से फसलों को हानि पहुँचती हैं। इसी कमी के कारण बाजार में अनाज, फलों और सब्जियों के दाम बढ़ जाते हैं। युद्ध, हड़ताल, दंगे आदि कारणों से भी दाम में वृद्धि हो जाती है। सबसे बड़ा कारण जनसंख्या की वृद्धि है। क्योंकि जनसंख्या वृद्धि के अनुपात में वस्तुओं का उत्पादन नहीं होता तब महँगाई में वृद्धि ज्यादा हो जाती है। महँगाई के कारण लोगों का जीवन निर्वाह बड़ा कठिन हो जाता है। मध्यम और गरीब वर्ग पर इसका सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है। गरीबों के बच्चे तो इस महँगाई के कारण पढ़ाई बीच में छोड़ देते है। लोग अपनी बेटी की समय पर शादी नहीं कर पाते।

महँगाई पर नियंत्रण बहुत आवश्यक है। सरकार व्यापारी और जनता समझदारी से काम करे तो इस समस्या पर बहुत कुछ मात्रा में काबू पाया जा सकता है। सरकार को खर्चे कम करके किसानों की सहायता करनी चाहिए उन्हें शिक्षित करना चाहिए तथा उत्पादन और जनसंख्या वृद्धि का अनुपात बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए। लोगों को जीवन में संयम और सादगी लानी चाहिए नहीं तो महँगाई एक विकट समस्या बनी रहेगी।

४. **तिरंगे झंडे की आत्मकथा**

झंडा ऊँचा रहे हमारा,
विजयी विश्व तिरंगा प्यारा।

देश-विदेश में ऐसा कौन है, जो मुझसे परिचित नहीं ? आज मैं भारत वर्ष की स्वतंत्रता, निर्भयता, धर्मनिरपेक्षता का प्रतीक हूँ। मुझे गर्व है कि मैं भारतीय हूँ। मैं संसद भवन, सचिवालय, विशिष्ट सरकारी कार्यालयों पर हमेशा फहराता रहता हूँ। १५ अगस्त तथा २६ जनवरी को लोग मुझे जगह-जगह फहराकर मेरा सम्मान करते हैं।

एक घड़ी की परवशता
कोटि नरक के सम है।
पलभर की भी स्वतंत्रता
सौं स्वर्गों से उत्तम है।

मैं भारतीयों से बलिदान तथा वीरता का ध्वज हूँ। मैं लोकतंत्र में सदा फहराता रहता हूँ। लेकिन मेरा निर्माण हुआ कैसे ? यही प्रश्न आपको सता रहा है। मेरा जन्म १८५७ के आंदोलन में हुआ। सभी भारतवासी मातृभूमि को गुलामी की शृंखलाओं से मुक्त कराना चाहते थे; एक छत्र के नीचे आना चाहते थे। तभी मेरी छत्रछाया में सभी भारतवासी इकट्ठा आए। लेकिन भारत के सपूतों ने जब भारतमाता को आजादी दिला दी, तब मुझमें बहुत बदलाव किए गए। वहीं मैं आपका आजका तिरंगा हूँ।

मुझे तीन रंगों का होने के कारण तिरंगा कहा गया। सबसे ऊपर जो केसरिया रंग है, वह बलिदान का प्रतीक है। भारत के वीरों ने जान की बाजी लगाकर देश को स्वतंत्र कराया। बीच में धवल रंग है वह शांति का प्रतीक है, वह हमें सन्मार्ग पर चलरे की प्रेरणा देता है। हरा रंग देश की खुशहाली और लहलहाती धरती का प्रतीक है। धवल रंग पर अशोक चक्र है, इसमें

SAMPLE

चौबीस आरे हैं। यह हमें कहता है निरंतर न्याय और अहिंसा के मार्ग पर चलो।

मैंने त्याग और बलिदान देखा है। महात्मा गांधी, पंडित नेहरू, लोकमान्य तिलक, भगतसिंह, स्वातंत्र्यवीर सावरकर इनकी कुर्बानी मैं कभी न भुलूँगा।

सागर चरण पखारे, गंगा शीश चढ़ावे नीर,
मेरे भारत की माटी, है चंदन और अबीर,
सौ-सौ नमन करू, मैं भैया, सौ-सौ नमन करूँ।

(त) १. **निम्नलिखित पत्र का प्रारूप (नमूना) तैयार कीजिए।**

निखिल चौधरी,
१०३, तुलसीबाग,
पुणे - ४११ ००२।
दि. २२ मार्च, २००९.

सेवा में
श्रीमान प्रधानाचार्य महोदय,
माधव विद्यालय, लक्ष्मी रोड,
पुणे - ४११ ००२।

विषय : मासिक शुल्क माफ करने हेतु प्रार्थना पत्र।

माननीय महोदय,

मैं निखिल चौधरी आपके विद्यालय में कक्षा १० वी (ब) का विद्यार्थी हूँ। मेरे पिताजी एक कपड़े की दुकान पर काम करते है। हमारी परिस्थिती निम्नवर्ग श्रेणी में आती है। घर में मेरे २ छोटे भाई बहन है। मेरे पिताजी घर खर्च व हमारी पढ़ाई का खर्च उठाने में असमर्थ है। अतः मेरी फीस माफ करने का कष्ट करे। मैं आगे पढ़ने का बहुत इच्छुक हूँ, तथा अपनी पढ़ाई जारी रखना चाहता हूँ। आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं अपनी मेहनत एवं लगन से अपने विद्यालय का नाम अवश्य रोशन करूँगा।

कृपया मेरी फीस माफ करने की कृपा करे।

धन्यवाद!

आपका आज्ञाकारी
निखिल चौधरी।

टिकट

प्रति,
श्रीमान प्रधानाध्यापक
माधव विद्यालय,
लक्ष्मी रोड,
पुणे ४११ ००२.

प्रेषक,
निखिल चौधरी
१०३, तुलसी बाग,
पुणे।

SAMPLE

२.

दिनेश यादव
बाजार सुधार समिती,
ठाणे।
दि. १२ फरवरी, २००९.

सेवा मे,
स्वास्थ्यधिकारी,
ठाणे जिल्हा कार्यालय,
ठाणे।

विषय : स्वास्थ्यधिकारी को-क्षेत्र की सफाई हेतु प्रार्थना शिकायती पत्र।

महोदय,

सादर निवेदन है कि सदर बाजार में कूडे-कर्कट का ढेर लगा रहता हैं। गन्दा पानी भी नालियों से बाहर गन्दगी फैलाता रहता है। इसके कारण मक्खी-मच्छर बढ़ रहे है। यहाँ पर दूर-दूर से व्यापारी वर्ग सामान खरीदने के लिए आता है। इस गन्दगी के कारण व्यापार पर भी काफी प्रभाव पड़ रहा है। कितनी ही बार आपके कर्मचारियों से भी कहा, पर उन्होंने एक कान से सुनी और दूसरे से निकाल दी।

आपसे अनुरोध है कि शीघ्र ही इस क्षेत्र के सफाई कर्मचारियों को आदेश देकर कूड़ा-कर्कट उठवाएँ और नालियों की स्वच्छता में भी नियमितता लाने के लिए कहें ताकि सामान खरीदने-बेचने वाले लोगों को भी परेशानी न उठानी पड़े।

धन्यवाद!

भवदीय,
दिनेश यादव।

टिकट

प्रति,
स्वास्थ्यधिकारी,
ठाणे जिल्हा कार्यालय,
ठाणे।

प्रेषक,
दिनेश यादव
बाजार सुधार समिती,
ठाणे।

(थ) **निम्नलिखित रूपरेखा के आधार पर कहानी लिखिए। उसे उचित शीर्षक दीजिए। कहानी से प्राप्त होने वाली सीख भी लिखिए :**

महात्मा का उपदेश

एक गाँव में बहुत बड़ा मेला लगा हुआ था। आसपास के गाँव के लोग मेला देखने आए थे। मेले में कई दुकानें थीं। लोग दुकानों में खरीददारी कर रहे थे। छोटे छोटे होटल में लोग खाने का स्वाद ले रहे थे। लेकिन अचानक कहीं से शोर सुनाई देने लगा। सड़कर पर बहुत

SAMPLE

सारे लोग इकट्ठा हुए थे। उनके सामने एक आदमी नीचे सिर झुकाए खड़ा था। सभी लोग उस आदमी पर पत्थर फेंक रहे थे। वह आदमी लोगों को पत्थर न मारने की प्रार्थना कर रहा था।

उसी रास्ते से एक महात्मा गुजर रहे थे। पत्थर मारनेवाले लोगों को महात्मा ने रूकने के लिए कहा। लोग रूक गए, लेकिन प्रत्येक व्यक्ति यहीं कह रहा था कि यह दुरात्मा, दुराचारी है। उनमें से एक मनुष्य ने कहा कि, "महात्मा, अब आप ही न्याय करे।" महात्मा शांत खड़े थे। वह सब लोगों की बातें सुन रहे थे।

महात्मा ने कहा, "मैं मानता हूँ कि इसने चोरी की है, चोरी करना पाप है, इसका दंड मिलना चाहिए। आप उसे दंड अपराध की सजा जरूर दो, लेकिन पहला पत्थर वहीं मारेगा, जिसने आज तक कोई पाप नहीं किया है।" पत्थर मारने के लिए उठे हुए सभी हाथ रुक गए। भीड़ में सन्नाटा छा गया। तब महात्मा ने लोगों से कहा, "भाईयों, इस धरती पर कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है, जिसने पाप न किया हो। हमें अपराधी को नहीं, बल्कि अपराध को नष्ट करना है।"

लोगों को अपने किए पर पछतावा हुआ, भीड़ गर्दन झुकाए खड़ी थी। महात्मा ने पापी मनुष्य को समझ देकर सुधारने का मौका दिया। हमें क्षमाशील होना तथा आत्मनिरीक्षण करना कितना आवश्यक है यह समझाया और महात्मा चले गए।

सीख : हमें पाप को नष्ट करना है, पापी को नहीं।

अथवा

एस्.एस्.सी. छात्रगणों का बिदाई

(कार्यालय प्रतिनिधि द्‌वारा)

खार २५ फरवरी २००९। कल यहाँ के नंदादीप विद्‌यालय में एस.एस.सी. कक्षा के छात्र-छात्राओं का बिदाई-समारोह बड़े शानदार तरीके और धूमधाम से मनाया गया। समारोह की अध्यक्षता फिल्मजगत के प्रसिद्‌ध अभिनेता श्री अमिताभ बच्चन जी ने की।

कार्यक्रम शाम के पाँच बजे माँ सरस्वती की अराधना एवं वंदना से शुरू हुआ। विद्‌यालय के वरिष्ठ अध्यापक श्री तिवारी जी ने अध्यक्ष महोदय का परिचय दिया। कक्षा १०वीं के सभी बच्चों को गुलाब के पुष्प अर्पित किए गए। हिंदी अध्यापक श्री मोहन वर्मा जी ने एस.एस.सी. कक्षा के छात्र-छात्राओं के प्रति असीम शुभकामनाएँ प्रकट कीं और अपने जीवन को गुलाब के फूलों के समान महकाने के लिए कहा।

छात्रों की तरफ से विजय देसाई और सुशील चौधरी ने शाला के सभी गुरूजनों के प्रति श्रद्‌धा सुमन अर्पित किए और उनके प्रति आदर प्रकट किया। छात्राओं की तरफ से कु. विजया तांबे ने विश्वास दिलाया कि सभी छात्र और छात्राएँ विद्‌यालय का गौरव बढ़ाने में पीछे नहीं रहेंगे। छात्र-छात्राओं की तरफ से विद्‌यालय को उपहार के रूप में एक कम्प्यूटर प्रदान किया गया।

अध्यक्ष महोदय ने बच्चों की शीला संयम एवं परिश्रण के द्‌वारा जीवन में आगे बढ़ने और शाला का नाम रोशन करने की सीख दी। अंत में मुख्याध्यापक जी ने अध्यक्ष के प्रति आभार प्रकट किया और यह आशा प्रकट की कि इसके साथही विद्‌यालय के अधिक से

SAMPLE

अधिक विद्यार्थी योग्यता सूची में अपना नाम अवश्य दर्ज कराएँगें।

कक्षा नौवीं के विद्यार्थियों की तरफ से स्वल्पाहार की सुंदर व्यवस्था की गई थी। आदर एवं स्नेहपूर्ण वातावरण में ग्रुप फोटो खिंचवाने के बाद राष्ट्रगीत के साथ समारोह समाप्त हुआ।

उ.८. **निम्नलिखित गद्यखंड के आधार पर उसके नीचे दिए गए प्रश्नों का उत्तर अपने शब्दों में लिखिए :**

१. बाबुराव विष्णु पराडकर जी ने हिंदी भाषा तथा साहित्य के विकास में योगदान दिया है।

२. पराडकरजी सरदार भगतसिंह के सहयोगी श्री राजगुरु के अभिभावक थे।

३. क्रांतिकारियों के सहयोगी होने के नाते अंग्रेज सरकार ने सन् १९१६ में राजद्रोह के अभियोग में गिरफ्तार किया।

४. योग्य शीर्षक - एक क्रांतिकारी - संपादकाचार्य बाबूराव विष्णू पराडकर।

❖❖❖❖

SAMPLE